Lecture – ②

Name of the college – A.P.S.M College, Barauni, Begusarai
Name – Dr. Bharti Kumari (GT)
Deptt – A.I.H&C
Lession/Plan for class – B.A., A.I.H&C, H.Part-I
paper – II

Date – 05-04-2021

Name of the Topic – Slavery (Gupt period)

दास प्रथा :- स्वरूप, प्राचीनता एवं ऐतिहासिक विकासक्रम

इतिहास के प्रारंभ से ही दासता की अवधारणा मानव जीवन के मध्य व्यवहृत होती रही है। समस्त प्राचीन सभ्यताओं के, यानि कि सभ्यताओं के सामाजिक एवं आर्थिक संरचना का यह एक सार्वभौम तत्व विशेषता रही है। मानव समाज में जितनी भी संस्थाओं का अस्तित्व रहा है, उनमें सबसे प्राचीन दासता की प्रथा है। मनुष्य के द्वारा मनुष्य का बड़े पैमाने पर उत्पीड़न इस प्रथा के अंतर्गत हुआ। दासता एक अति प्राचीन संस्था है, जिसकी उत्पत्ति का कोई एक विशेष समय निर्धारित करना संभव नहीं है। दासता अति प्राचीन काल से ही विश्व की कई सभ्यताओं अथवा संस्कृतियों में विद्यमान रही है, जिससे भारत भी अछूता नहीं रहा है। दास से मूलतः तात्पर्य यह

P.T.O.

Scanned with CamScanner

कि दास किसी दूसरे व्यक्ति द्वारा अधिकृत और पूर्णतः या अधिकांशतः अधिकार एवं स्वतंत्रता से रहित व्यक्ति होता है। इस तरह नियमानुसार वह किसी अन्य व्यक्ति की निजी सम्पत्ति होता है। जो अपने स्वामी की इच्छा पर आश्रित रहता है। और स्वामी उसे किसी भी प्रकार के कार्य के लिए मजबूर कर सकता था। और कम से कम सिद्धान्ततः तो उसके जीवन से भी वंचित कर सकता है।

मेगास्थनीज के अनुसार → भारत में दास नहीं थे। परंतु कौटिल्य ने 9 नौ प्रकार के दासों का वर्णन किया है। जो निम्न प्रकार से है।—

1) ध्वजाहृत → युद्ध में जीता हुआ दास

(2) उदर दास → पेट का दास

3) गृहजात → घर में दासी द्वारा उत्पन्न दास

(4) दायागत → पैतृक सम्पत्ति के रूप में प्राप्त दास

(5) लब्ध → दान में प्राप्त हुआ दास

(6) क्रीत → क्रय किया हुआ दास

P.T.O.

Scanned with CamScanner

(7) आत्मविक्रयी → स्वयं को बेचने वाला दास

(8) अहितक → ऋण के बदले धरोहर के रूप में रखा गया दास।

(9) दंडप्रणीत → दण्ड के परिणाम स्वरूप बनाया गया दास।"

मेगास्थनीज के अनुसार — भारत में सभी स्वतंत्र और समान हैं। उनमें कोई भी दास नहीं है।" डायोडोरस — "भी मानता है कि कानून के अनुसार कोई किसी को दास नहीं बना सकता है। वस्तुत: ऐसी स्थिति नहीं थी।"

अर्थशास्त्र में भी दासों की विभिन्न श्रेणियों का वर्णन है। स्त्री दासों के रूप में धात्री, अध्याचिका व परिचारिका का उल्लेख कौटिल्य ने किया है। स्त्री दासें भी एक श्रेणी बंधकों की भी थी।

जहाँ तक भारतीय दास प्रथा की बात है तो इस संदर्भ में बहुत कुछ लिखा जा चुका है। भारतीय इतिहासकारों में डी.डी. कौशाम्बी ने उत्पादन सम्बंधों में सेवी वर्ग के निर्माण को एक प्रधान परिवर्तन कहा दिया। यू.एन. घोषाल तथा के. एम. सान ने क्रमश: लगभग 200ई.पू. से

P.T.O.

400 ई. के बीच तथा प्राचीन भारत में क्रम की विभिन्न कोटियों में से एक कोटि के रूप में दासों की चर्चा की है। आर. एस. शर्मा ने अपने अनेक ऐतिहासिक मानक ग्रंथों में भारतीय समाज की अर्थव्यवस्था के अध्ययन के लिए दास श्रम की आवश्यकता को महसूस करते हुए भारतीय दासता पर बहुत कुछ लिखा है। इन इतिहासकारों ने दासता के सम्बंध में जो भी अध्ययन प्रस्तुत किया है उससे दासता के सम्बंध में कई बातें उजागर होती हैं। इन संदर्भों में लिखने का उद्देश्य यह है कि इन उपर्युक्त सामग्रियों तथा अन्य नवीन तथ्यों के आधार पर प्राचीन भारत में दासता की स्थिति पर यथेष्ट प्रकाश डाला जा सके। साथ ही यह दासों के सम्बंध में पूर्व प्रतिस्थापित मान्यताओं की वास्तविक ऐतिहासिक कोटि के आलोक में देखने का एवं समझने का एक प्रयास है।

भारत में दासों की उत्पत्ति को दो दृष्टिकोणों से देखा जा सकता है, पहला, साहित्यिक साक्ष्यों में ऋग्वेद सर्वप्रथम दास प्रथा की उत्पत्ति का प्रमाण मिलता है जबकि दूसरा दृष्टिकोण पुरातात्विक साक्ष्यों पर आधारित है इसका प्रारंभ अत्यंत प्राचीन काल से है, जबकि दूसरा दृष्टिकोण पुरातात्विक साक्ष्यों

P.T.O.

Scanned with CamScanner

आधारित है। संभवतः प्रागैतिहासिक काल से ही है। हड़प्पा और मोहनजोदड़ो के समाज (2500 ई. पूर्व 1500 ई. पू.) में भी दासों का अस्तित्व था जो तत्कालिन जीवन में पराजित होकर निम्न स्तर से सम्बंध थे। मोहनजोदड़ो के बड़े-बड़े भवनों में छोटे कमरों का निर्माण इस बात की ओर इंगित करता है कि इनमें सेवक या दास रहते होंगे। इन घरेलू सेवकों अथवा दासों के अतिरिक्त केन्द्रीय अधिकारी भी दासों की सेवा कार्य के लिए नियुक्त करते थे। इसके प्रमाण के लिए मोहनजोदड़ो की खुदाई से प्राप्त एक ही कतार में बने हुए आवासों की दो पंक्तियाँ देखी जा सकती है।

वैदिक काल के दासप्रथा के स्पष्ट साक्ष्य प्राप्त होते हैं। सर्वप्रथम ऋग्वेद में दासों के विषय में सूचना मिलती है। जो प्रायः आर्यों के प्रतिस्पर्धी के रूप में वर्णित किये गये हैं। वास्तव में अनार्यों को दास 'दस्यु' या असुर कहा गया है। ऋग्वैदिक कालीन अनार्यों को 'दास' मृधवाक (जिनकी भाषा अस्पष्ट थी) अकर्मन (वैदिक कर्मकांड से शून्य) अदेवयु (वैदिक देवताओं को न पूजने वाले) अब्रह्मन (देवों के प्रति भक्ति से रहित) देवपीयु (वैदिक देवताओं के निन्दक) शिश्नदेव (लिंगों की पूजा करने वाले) अनास (बिना नाक वाले) कृष्णयोनि (श्याम रंग) अमन्तु (अज्ञानरूप) कहा गया है। आर्यों को भारत में अपना आधिपत्य जमाने से पूर्व अनार्यों से कड़ा संघर्ष

P.T.O.

संघर्ष करना पड़ा था। ऋग्वेद से पता चलता है कि वे चौड़े तथा पाषाण निर्मित पुरों में रहते थे। इन पुरों को वैदिक देवता इन्द्र ने विनष्ट कर दिया जिसके आधार पर पुरन्दर के नाम से जाने लगे। एवं विख्यात हो गये। एक स्थान पर कहा गया है कि इन्द्र ने शतवर्ण को गुहा के नीचे ढकेल दिया। इस प्रकार अनार्य पराजित हुए तथा उन्हें दास बना लिया गया। वैदिक ग्रन्थों के कई उल्लेख दासियों की बड़ी संख्या में होना प्रमाणित करते थे। उदाहरणार्थ - पुरुकुत्स के पुत्र त्रसदस्यु ने एक ऋषि को 60 दासियाँ उपहार में दी थी।

जहाँ तक बौद्ध युग में पालनी काल में दास की स्थिति की बात करते हैं तो हम देखते हैं कि बौद्ध युग में दासों को सेना, कृषि, उच्चवर्ग के आवास, मध्यम श्रेणी के गृहों और व्यापारियों के कार्यों के निमित्त नियुक्त किया जाता था। इनमें भी जाति थी जो धीवार में उत्पन्न तो हुए किन्तु सैनिक बन गए। 'दीर्घ निकाय' और 'मज्झिम निकाय' में दास - दासियों का उल्लेख समुचित रूप से किया गया है। जातकों में दासों के अनेकानेक विवरण मिलते हैं। दास - दासियों के क्रय - विक्रय विभिन्न प्रकार के सेवा भाव व भेंट - उपहार आदि। विभिन्न स्थितियों के संदर्भ - जातकों में भरे पड़े है जो दासी अत्यंत सुन्दर और रूपवती थी उसका भी क्रय मूल्य अधिक देना पड़ता था। कौटिल्य ने तीनों दासों का विशद रूप से चित्रण किया है। जो कठिनाईयों और मजबूरियों के कारण दास जाते थे।

भारती कुमारी
05-04-2021